मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है!

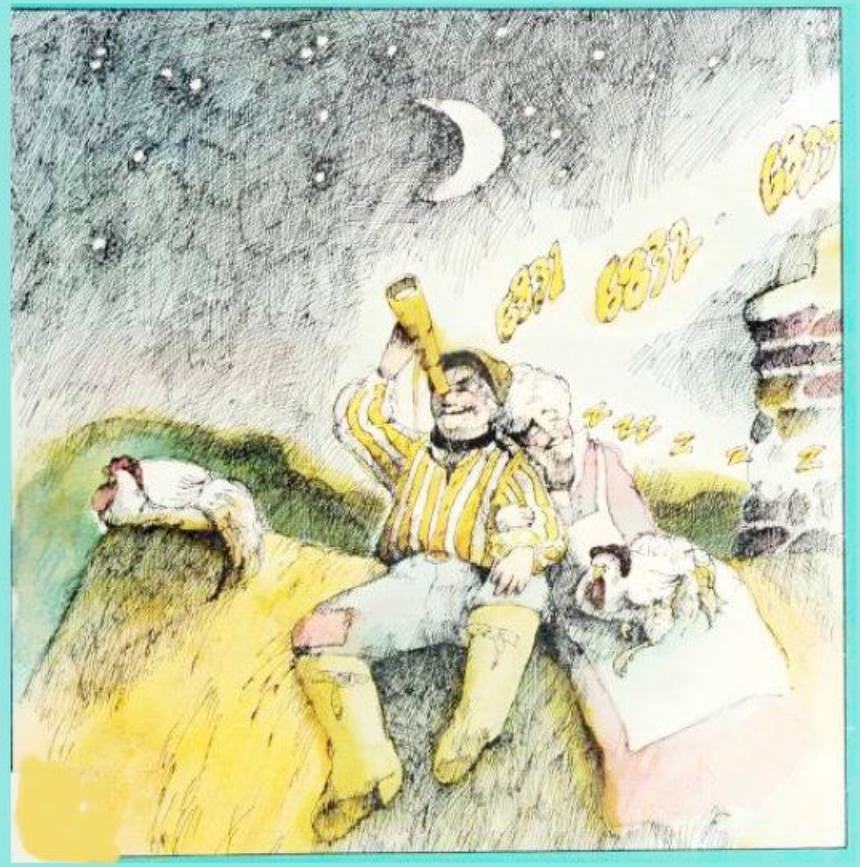

ट्रिसिया स्प्रिंगस्टब

चित्र: जिम लैमार्चे

एक बार की बात है मिन्नी और हेनरी नाम का एक बूढ़ा दंपत्ति था. वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे.

मिन्नी एक दयालु और प्यार करने वाली महिला थी. लेकिन वो थोड़ी भुलक्कड़ स्वभाव की थी. उसके पास खिड़की के बाहर देखने के लिए बहुत सी अद्भुत चीजें थीं. इसलिए अक्सर जब हेनरी घर आता था तो उसे जला हुआ सूप या एप्पल पाई में दालचीनी के बजाय काली मिर्च खाने को मिलती थी. लेकिन हेनरी मिन्नी से बहुत प्यार करता था. उसे लगता था कि मिन्नी जो कुछ भी पकाती थी वह अद्भुत था.

"मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है!" वो हमेशा कहता था.

लेकिन क्या हुआ, जब मिन्नी ने हेनरी के लिए जन्मदिन का केक बनाया, एक ऐसा केक जो किसी राजा को भी खुश करता. क्या हेनरी को वो पसंद आया?

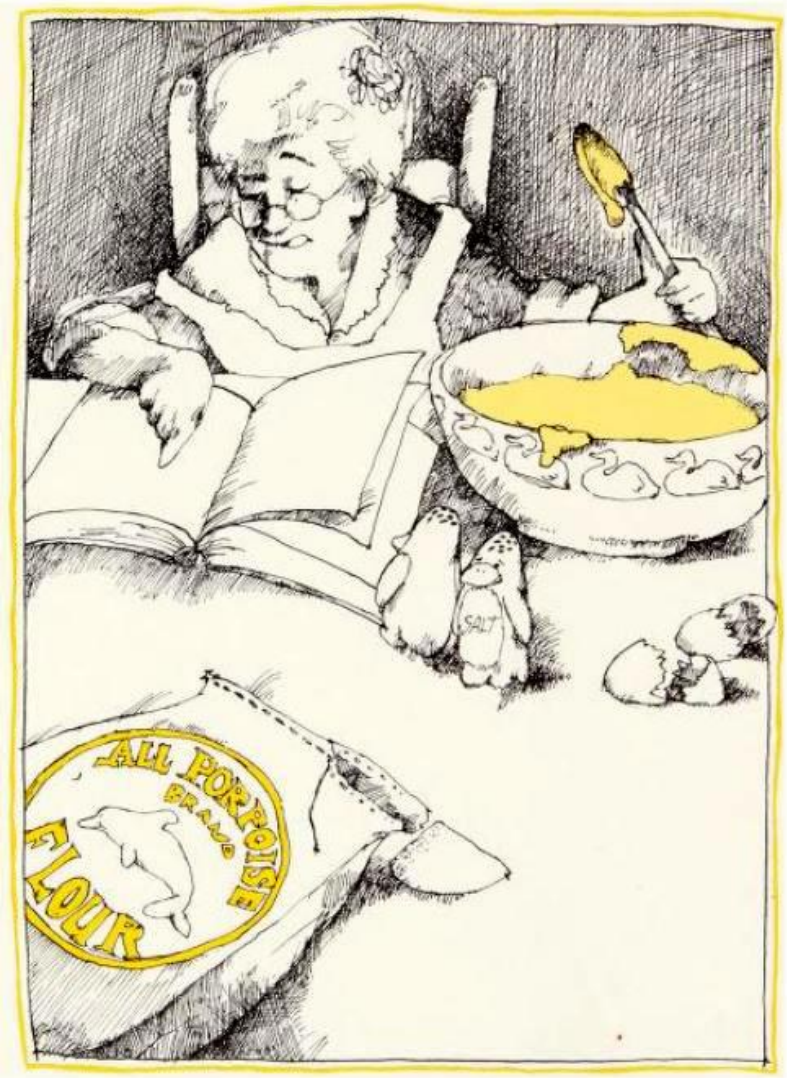

मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है!

ट्रिसिया स्प्रिंगस्टब

चित्र: जिम लैमार्चे

एक बार की बात है मिन्नी और हेनरी
नाम का एक बूढ़ा दंपत्ति था.

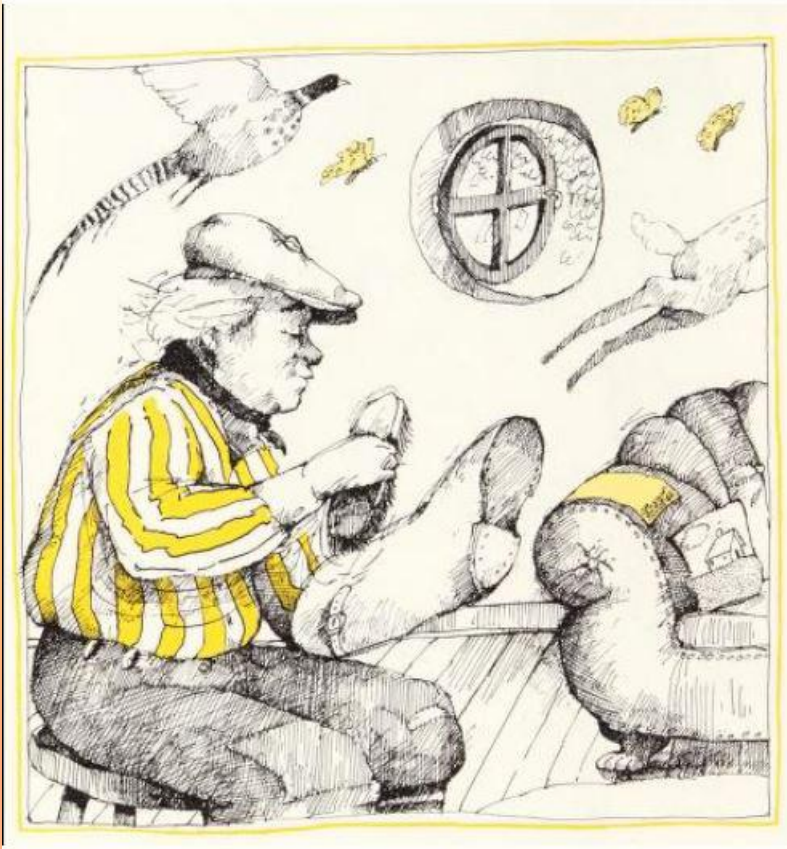

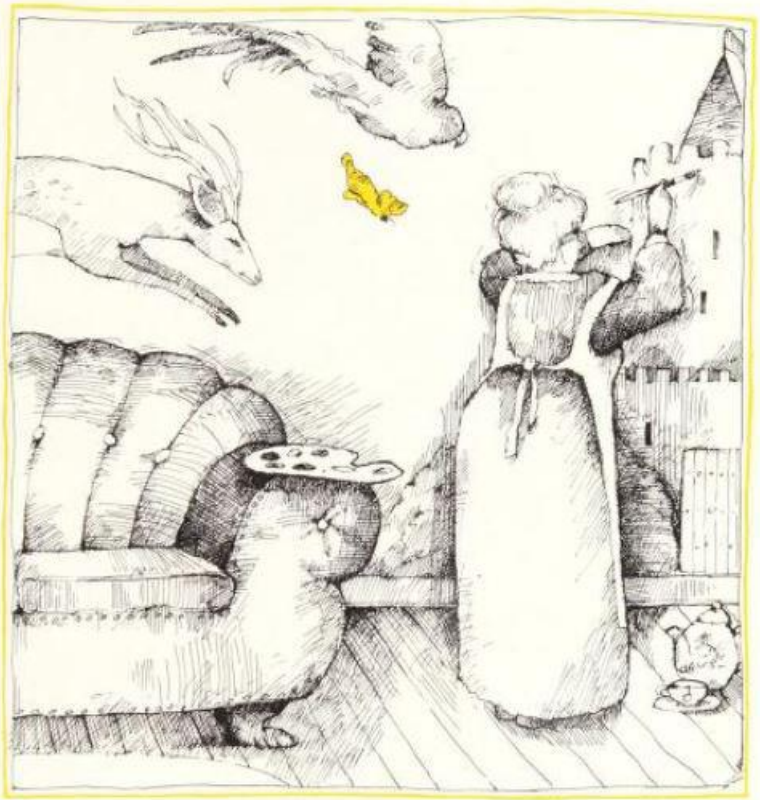

वे एक घने जंगल में रहते थे.

वहां पेड़ इतने घने थे,
कि बारिश कभी जमीन को छू नहीं पाती थी.

उनकी खिड़की के बाहर पक्षी गाते थे.

घर के अंदर की दीवारों पर मिन्नी ने महल
और जंगल के जानवर पेन्ट किए थे.

मिन्नी और हेनरी हर दिन कड़ी मेहनत करते थे.

रात में वे अपनी छत पर बैठकर
सितारों को गिनते थे.

उनके पास ज्यादा पैसे नहीं थे.

लेकिन उन्हें उसकी ज़्यादा परवाह भी नहीं थी.

"जब तक मेरे पास मेरा हेनरी है,

मेरे पास सब कुछ है," मिन्नी कहती थी.

"मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है!" हेनरी ने कहा.

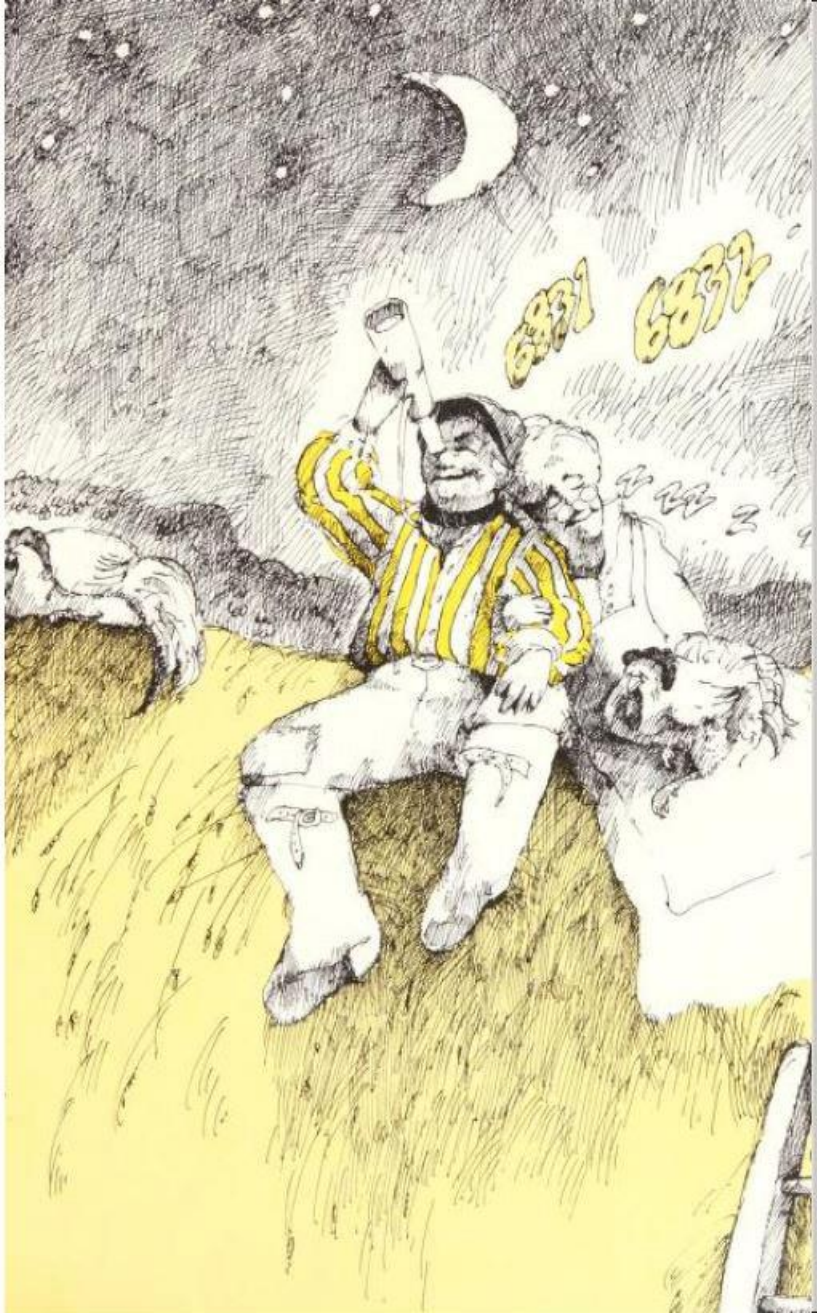

हेनरी एक लकड़हारा था.

एक सुबह उसने मिन्नी को गर्मजोशी से चूमा.

फिर उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई.

और वो काम पर चला गया.

ठक! ठक! ठक! धड़ाम!

मिन्नी ने पेड़ों को गिरते सुना.

"हेनरी को आज रात बहुत भूख लगी होगी," उसने सोचा.

मैं आज उसके लिए एप्पल पाई बनाऊंगी."

मिन्नी ने अपना बड़ा नीला कटोरा निकाला.

वो खिड़की के पास बैठ गई.

उसने सेब काटे.

खिड़की से बाहर

उसने पक्षियों को देखा.

पक्षी अपने बच्चों के लिए

खाना ला रहे थे.

मिन्नी उन्हें देखती रही.

फिर वो भूल गई कि वो क्या कर रही थी.

उसने बिना देखे ही

सेबों पर दालचीनी की बजाए

काली मिर्च डाल दी.

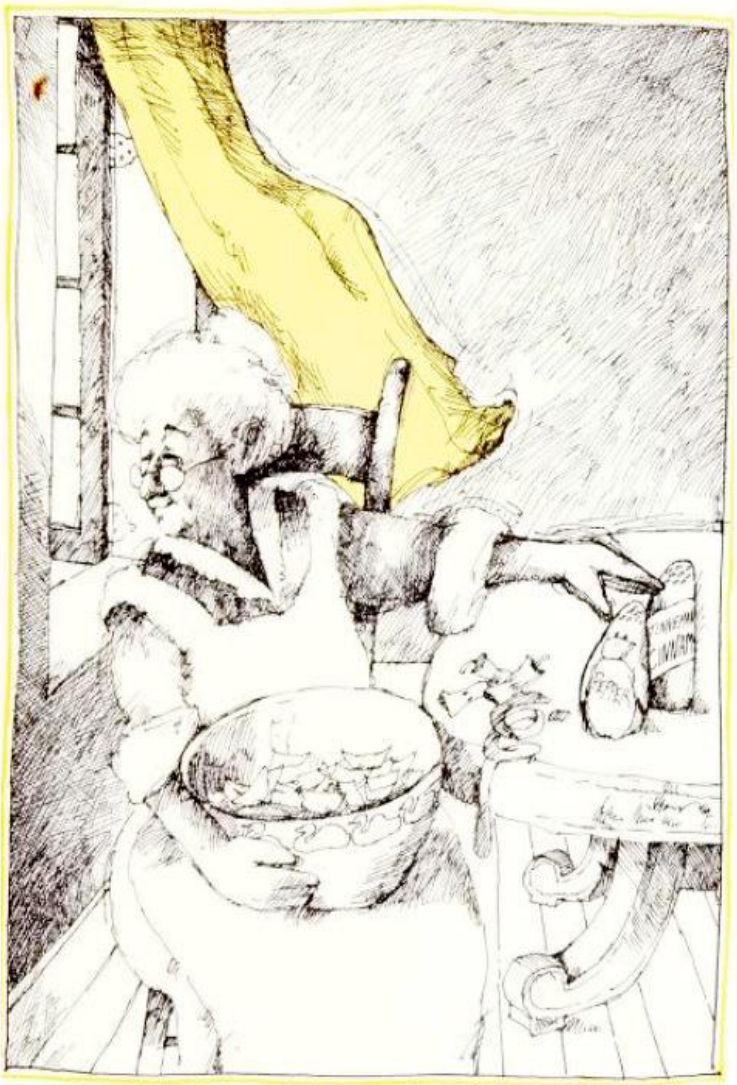

"आ-छू!" हेनरी को बड़ी छींक आई.

जब उसने अपना पहला कौर खाया.

"प्रिय!" मिन्नी ने रोते हुए कहा.

"यह मैने क्या किया!"

उसने अपने पति को एक रूमाल दिया.

"बहुत कम लोग ही ऐसी एप्पल पाई बना सकते हैं जो आंखों में आंसू लाएं," हेनरी ने कहा.

"मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है!"

अगले दिन मिन्नी ने कहा,

"आज मैं अधिक सावधान रहूंगी."

फिर वो बर्तन में सूप बनाने लगी.

लेकिन फिर से बाहर पक्षियों ने गाना शुरू किया.

मिन्नी ने उन्हें बड़े ध्यान से देखा.

उस मॉकिंगबर्ड पक्षी ने कोयल की तरह गाया.

उसने नीलकंठ जैसी आवाज़ की.

मिन्नी ने उसका गीत बार-बार सुना.

लेकिन इससे पहले कि मिन्नी होश में आती

उसका सारा सूप जल चुका था!

"हे भगवान!" मिन्नी ने कहा.

"यह मैने क्या किया!"

तभी हेनरी घर आया.

"मेरे प्यारे हेनरी," मिन्नी ने कहा.

"मुझे आशा है कि तुम बहुत भूखे नहीं होगे."

"देखो, मेरा वज़न बढ़ रहा है!" हेनरी ने कहा.

"इसलिए अब मुझे बिल्कुल इसी तरह का खाना चाहिए.

मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है"

अगले दिन हेनरी का जन्मदिन था.

सुबह उसने मिन्नी को गर्मजोशी से चूमा.

फिर उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई.

और वो काम पर चला गया.

ठक! ठक! ठक! धड़ाम!

मिन्नी ने हेनरी को काम करते हुए सुना.

"आज मैं हेनरी के लिए एक ऐसा केक बनाऊंगी जो किसी राजा को भी खुश करेगा," उसने कहा.

फिर उसने अपना बड़ा नीला कटोरा निकाला.

उसने उसमें चीनी, मक्खन और नमक डाला.

उसने अंडे डाले.

उसने दूध डाला.

वो बहुत मेहनत कर रही थी.

वो मिन्नी का बनाया अब तक का सबसे अच्छा केक होने वाला था.

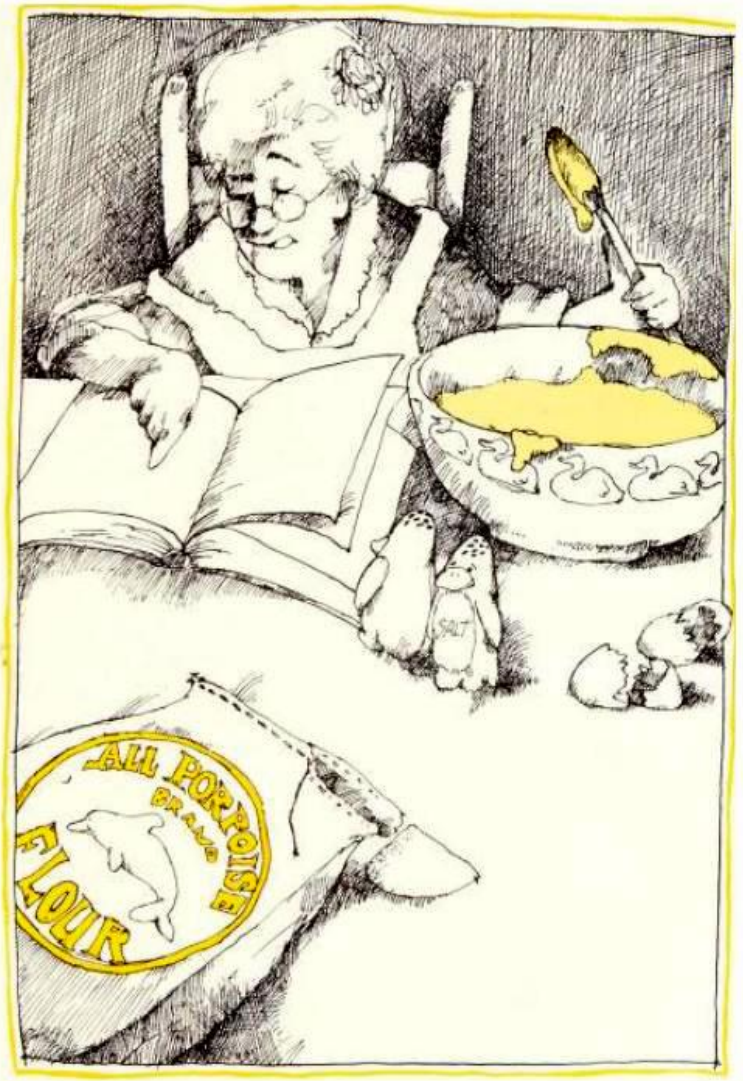

तभी दो चिड़ियों ने खिड़की से उड़ान भरी.

ऐसा लग रहा था जैसे वो नाच रही हों.

धूप में उनके हरे और लाल रंग चमक रहे थे.

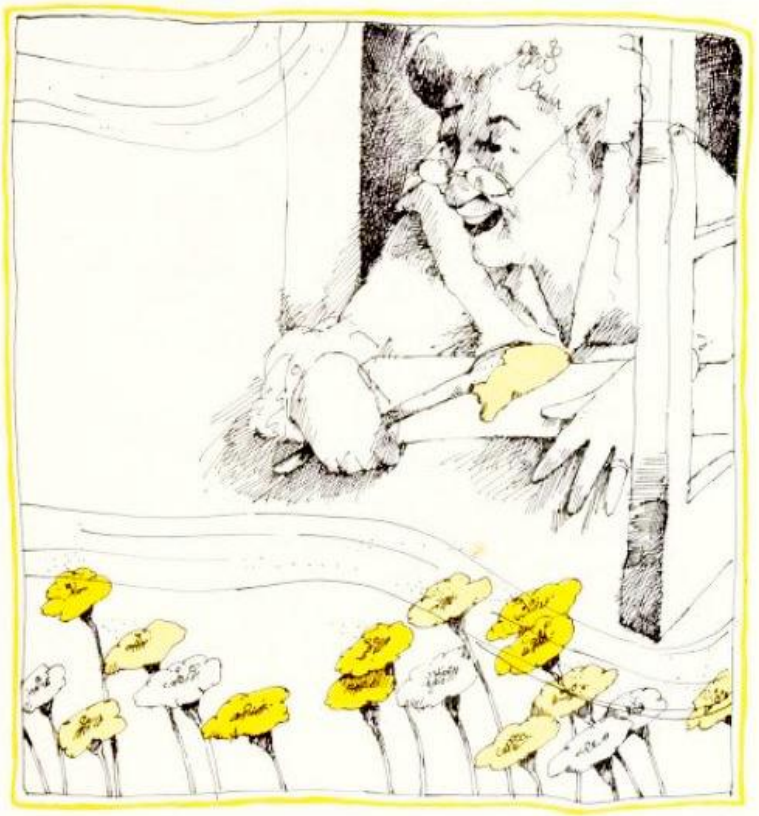

मिन्नी को वो दोनों चिड़ियें, उड़ते हुए गहनों की तरह लगीं.

उसने उन्हें रुक कर देखा और निहारा.

जब वे चिड़िये उड़ गईं,

तब मिन्नी अपने केक पर वापस गई.

"अरे!," उसने कहा,

"क्या मैंने केक में चीनी डाली, या नहीं?

मुझे ऐसा नहीं लगता."

फिर उसने केक में और चीनी डाल दी.

"अंडे का क्या?" उसने सोचा.

"क्या मैंने उसमें दो या तीन अंडे डाले?

हे भगवान! मैं भूल ही गई!

खैर, एक और अंडे से कोई ज़्यादा फर्क नहीं पड़ेगा."

जल्द ही मिन्नी ने केक में सब चीज़ें दो बार डाल दीं.

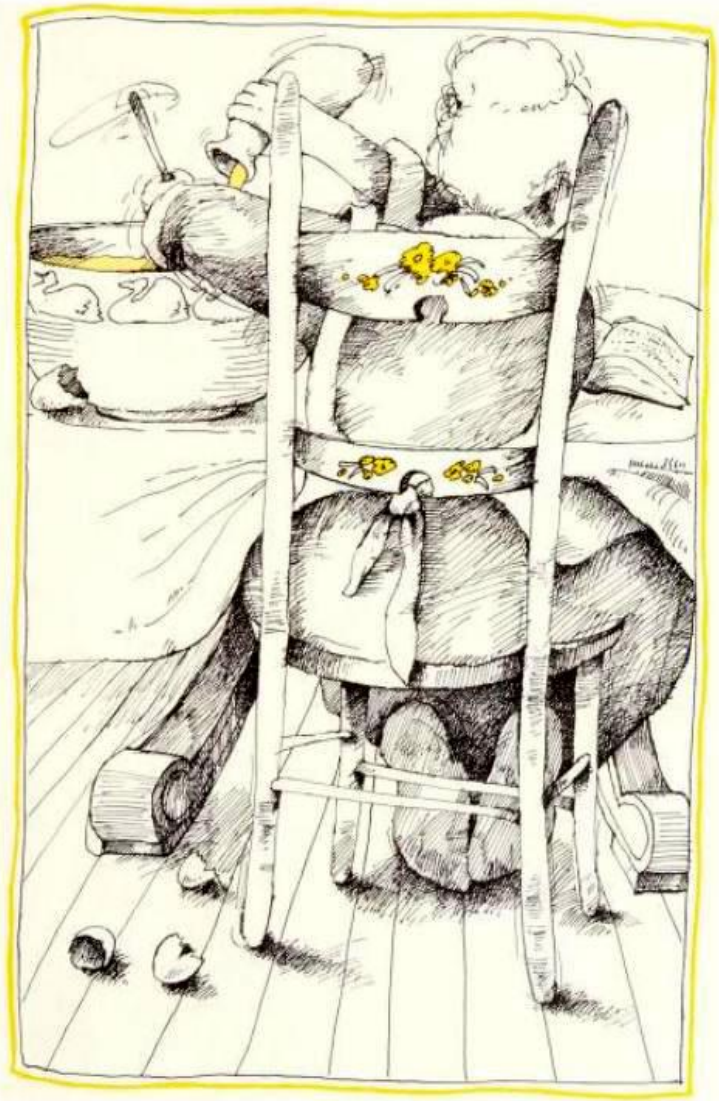

उसने केक को अपने सबसे बड़े बर्तन में रखा.

वो बर्तन इतना बड़ा था कि उसमें एक बच्चा छिप सकता था.

फिर उसने बर्तन को भट्टी में धकेल दिया.

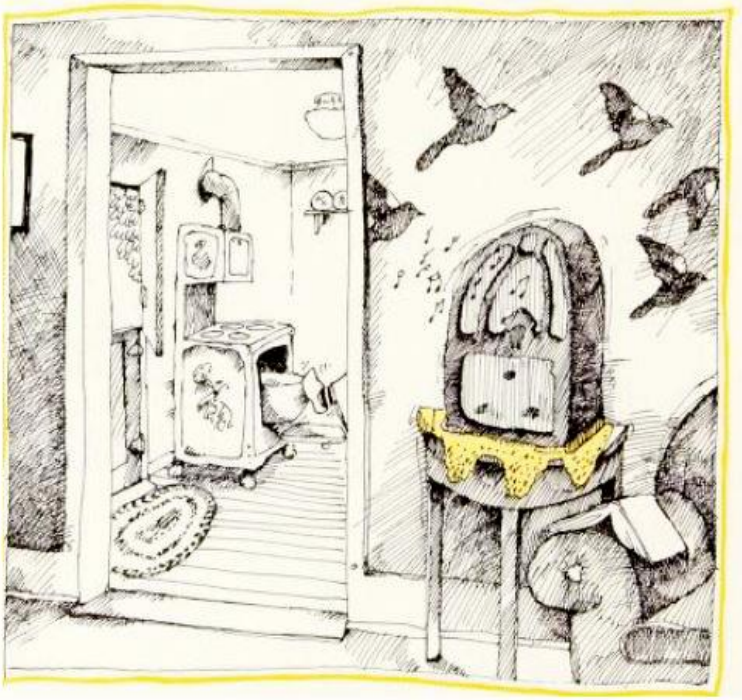

"वाह!" उसने कहा.

मिन्नी ने अपना केक बहुत देर तक पकाया.

फिर उसने उसे ठंडा करने के लिए भट्टी के बाहर खींचा. फिर वो केक के पास बैठ गई.

वो बहुत थक गई थी!

तभी मिन्नी ने घोड़ों की आवाज सुनी.

क्लिप-क्लॉप, क्लॉप-क्लॉप.

तभी उसने किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी,

"मैं कल रात को ही गहने पहनूंगी!"

"तुम ऐसा नहीं करोगी!" दूसरी आवाज चिल्लाई.

"मैं करूंगी!"

"बेटियों! बेटियों!" एक तीसरी आवाज ने कहा.

"मैं तुमसे भीख माँगती हूँ! इस लड़ाई को बंद करो."

फिर दो युवतियां और उनकी मां

जंगल में घोड़ों पर सवार होकर आए.

दोनों बेटियों ने मिन्नी को देखा,

लेकिन उन्होंने लड़ना बंद नहीं किया.

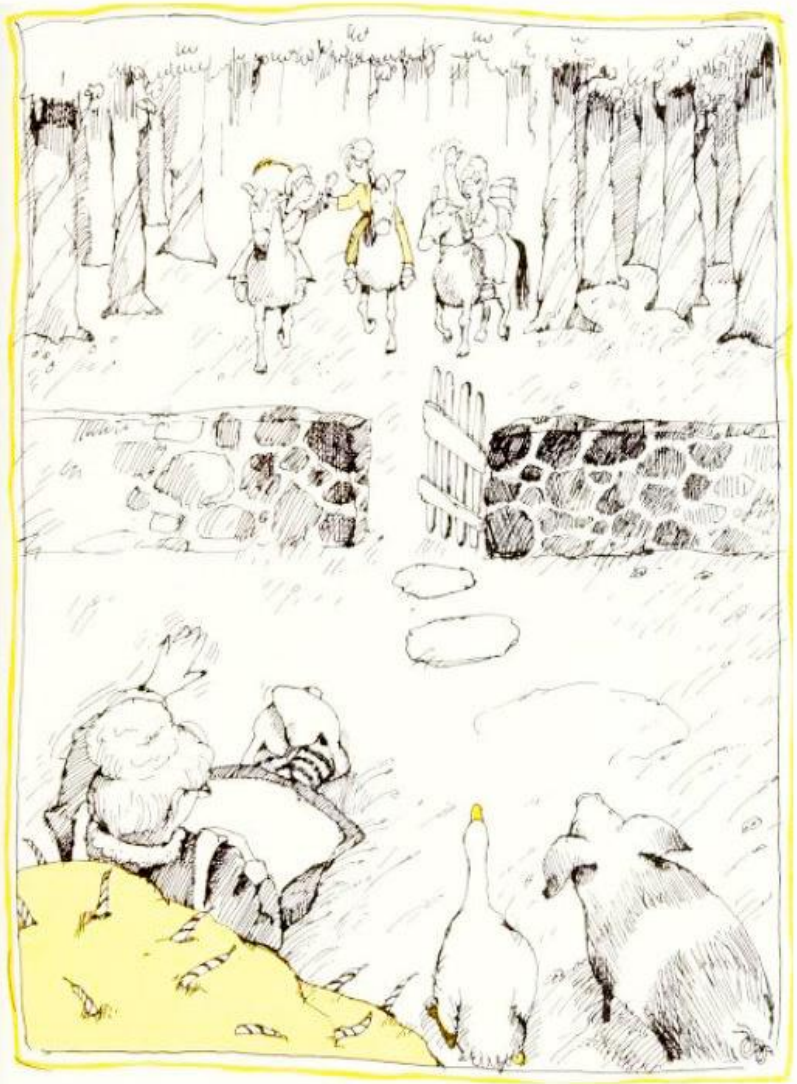

"नकटी!" एक चिल्लाई.

"कनकटी!" दूसरी चिल्लाई.

"हे भगवान," मिन्नी ने कहा.

उसने अपने केक को ठंडा करने के लिए उसपर फूंका.

"कृपया मेरी बेटियों को क्षमा करें," माँ ने कहा.

"हम राजा द्वारा आयोजित नाच में जा रहे हैं.

हम कई दिनों से सवारी कर रहे हैं.

और वे दोनों इस बात पर लड़ रही हैं

कि उनमें से कौन गहने पहनेगी.

मैं उनकी बातें सुन-सुनकर थक गई हूं."

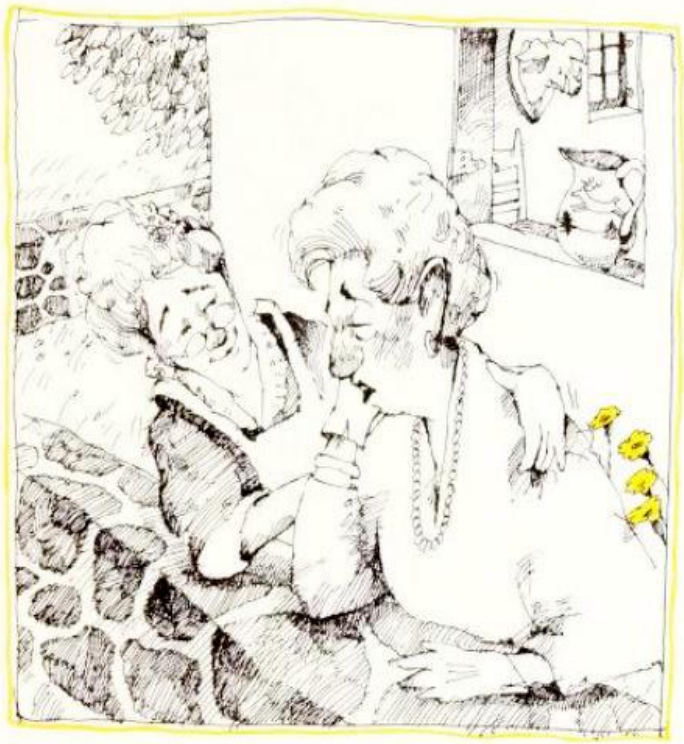

"प्रिय मित्रों," मिन्नी ने कहा.

"यहाँ रुको और कुछ देर आराम करो. हाँ, क्यों नहीं?

जब हेनरी घर आएगा तो फिर आप कुछ केक भी खा सकती हो."

'केक!" बेटियां एक साथ चिल्लाईं.

"आप इसे केक कहती हैं?"

"चुप रहो बेटी!" उनकी माँ चिल्लाई.

"क्या तुम में कोई शिष्टाचार नहीं है?"

मिन्नी ने फिर से अपने केक की ओर देखा.

यह सच था कि उसका केक पहाड़ों और घाटियों की तरह उभरा हुआ था.

यह सच था कि उसका केक लकड़ी के जूते जितना सख्त था.

"लेकिन मेरे पति को यह केक ज़रूर पसंद आएगा," उसने कहा.

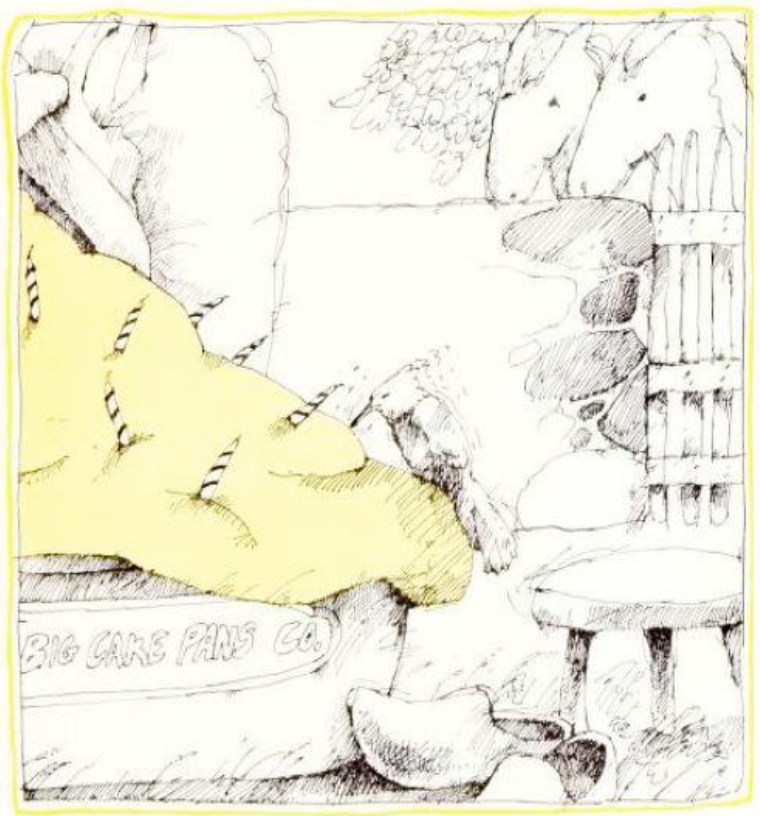

"यदि तुम्हारा पति उस केक को खाएगा, तो वो एकदम मूर्ख होगा!" बेटियों ने कहा.

"बस अब बहुत हो चुका!" उनकी माँ ने कहा.

"हम देखेंगे कि मूर्ख कौन हैं."

फिर वो मिन्नी की ओर मुड़ी.

"यदि तुम्हारा पति वो केक खाता है, तो यह गहने तुम्हारे होंगे."

यह सुनकर दोनों बेटियों का मुंह खुला रह गया.

लेकिन उन्होंने कुछ भी नहीं कहा.

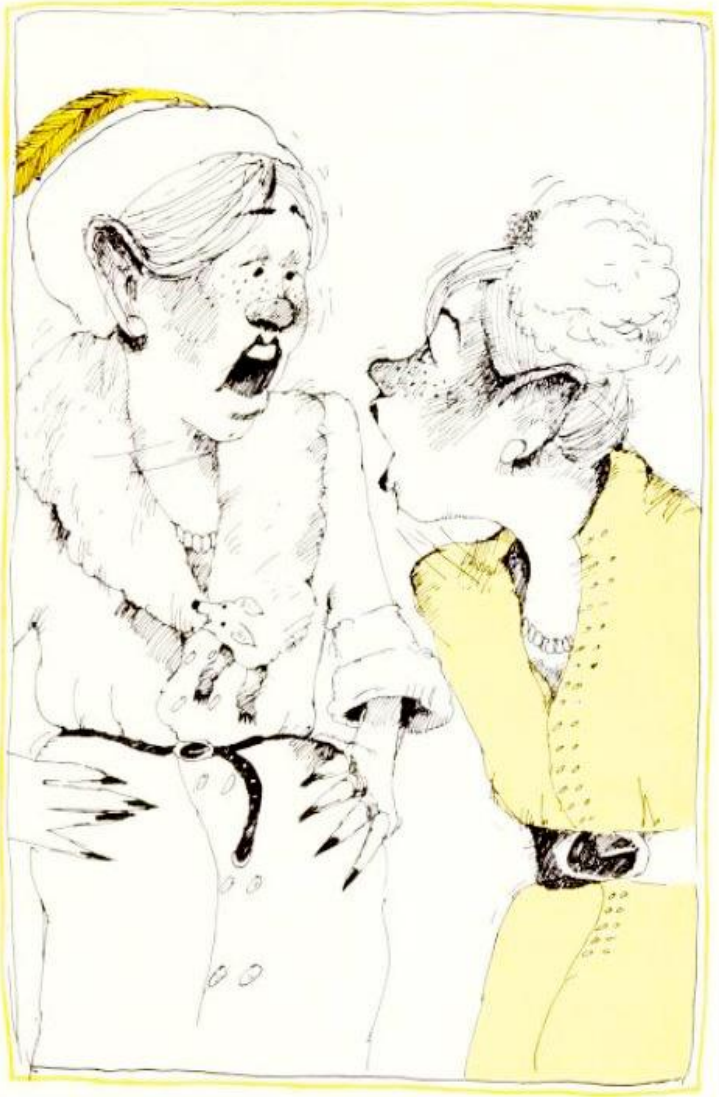

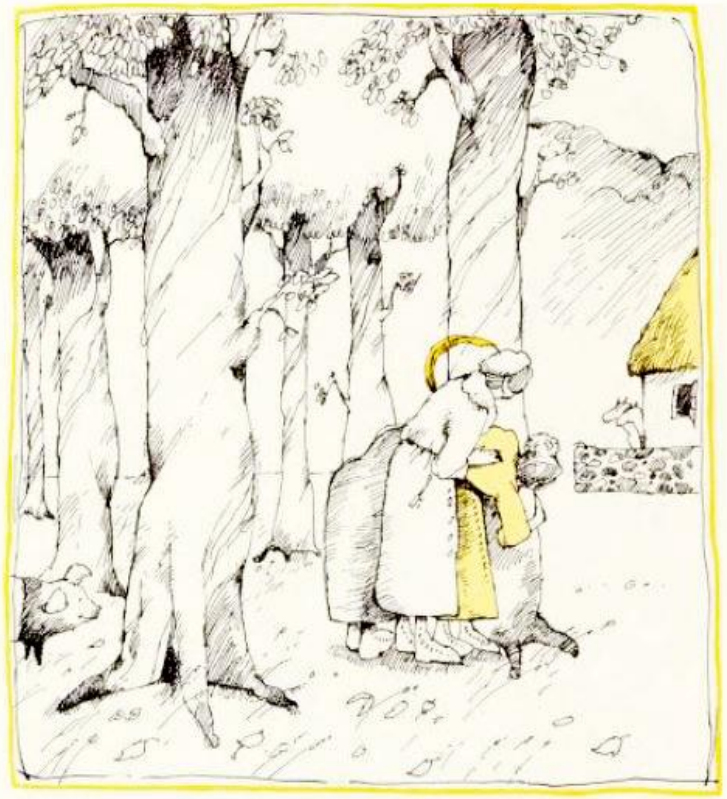

फिर तीनों महिलाएं एक पेड़ के पीछे छिप गईं.

जल्द ही हेनरी घर आया.

उसने मिन्नी को गर्मजोशी से चूमा.

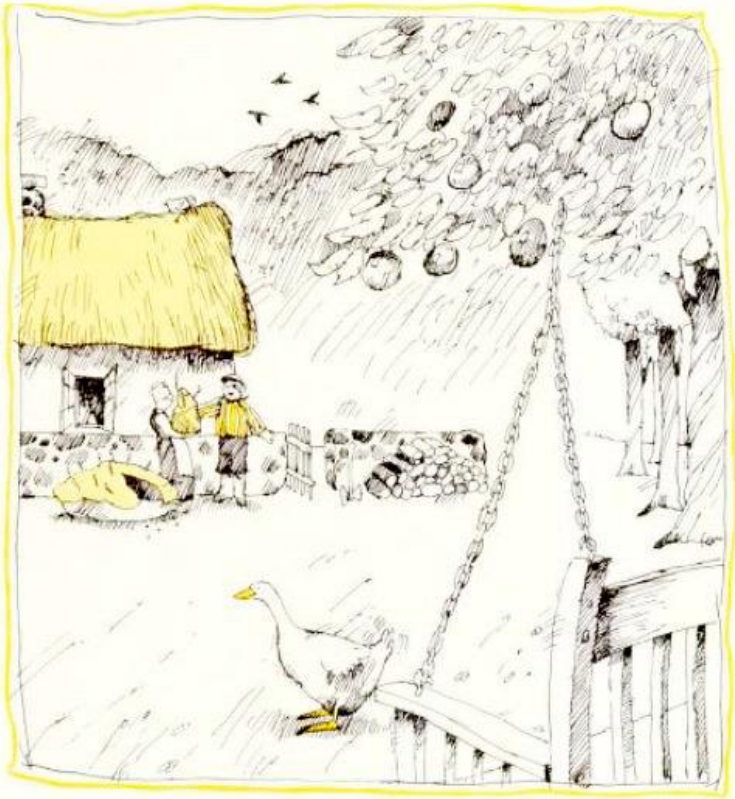

"जन्मदिन मुबारक हो, प्रिय," मिन्नी ने कहा.

उसने हेनरी के लिए केक का एक बड़ा टुकड़ा काटा.

वो केक एक ज्वालामुखी के टुकड़े की तरह लग रहा था.

हेनरी पूरे टुकड़े को दो कौर में काटकर खा गया.

फिर उसने अपने होंठ चाटे.

"यह एक छोटे से पहाड़ के आकार का केक लगता है!" हेनरी ने कहा.

"कितनी शानदार जन्मदिन की भेट है!

मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है"

महिलाएं पेड़ के पीछे से निकलीं.

दोनों बेटियों के मुंह अभी भी खुले थे.

पर उनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला.

लेकिन उनकी मां हंस रही थी.

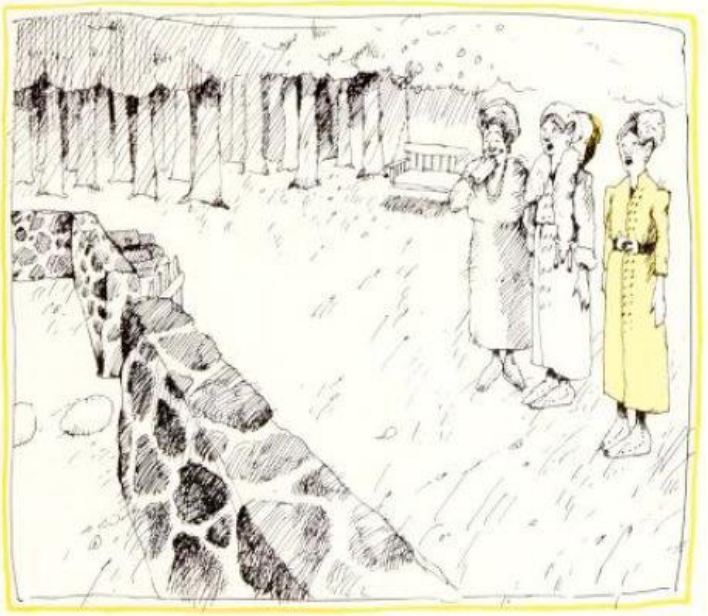

लड़कियों की माँ ने वो गहने मिन्नी और हेनरी को सौंप दिए.

"शांति का यह क्षण हर किसी के लिए मूल्यवान है," माँ ने कहा.

"आओ, बेटियों, अब हमें जाना चाहिए."

और फिर तीनों महिलाएं चली गईं.

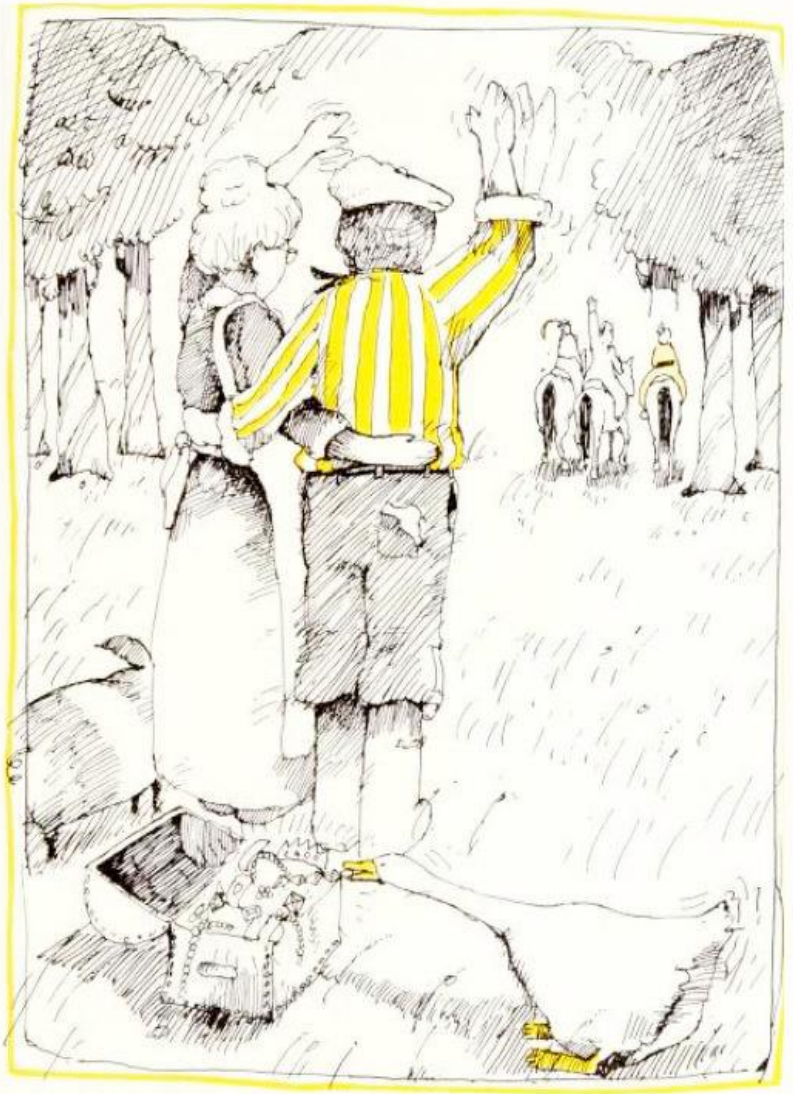

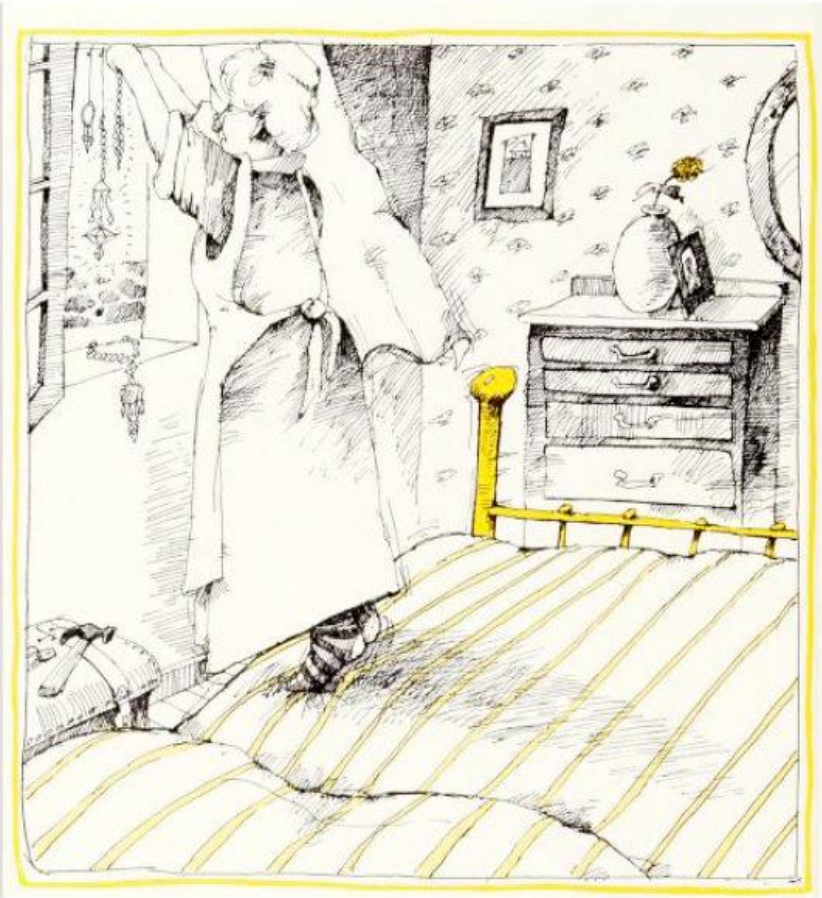

मिन्नी और हेनरी ने उन गहनों को अपनी खिड़कियों में लटका दिया.

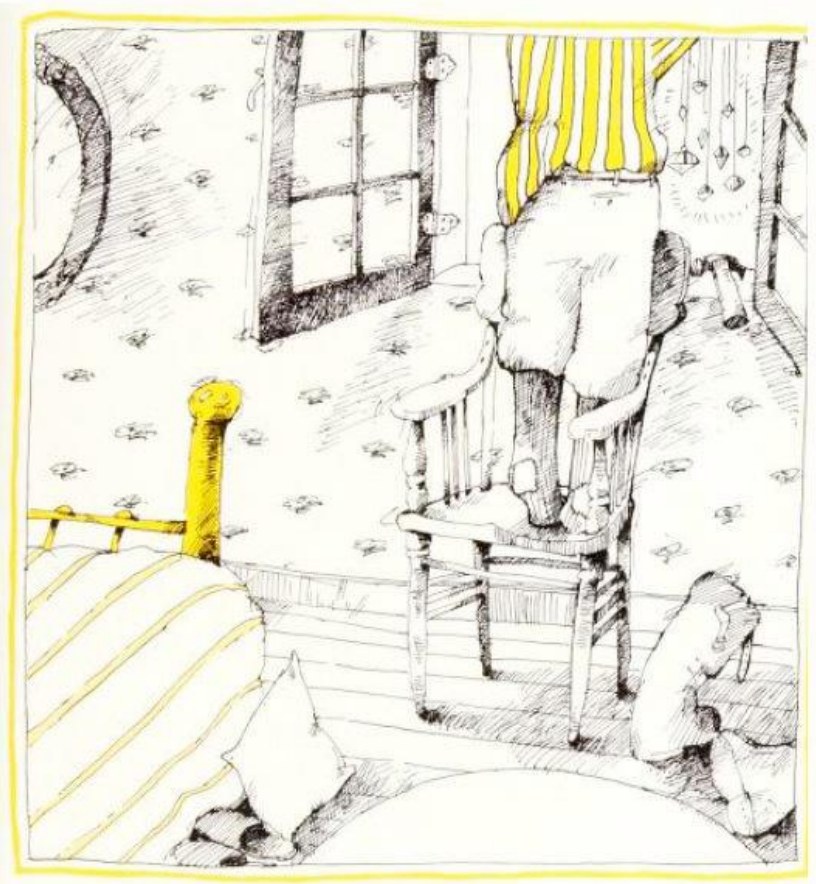

जब सूरज निकला,

तब वे गहने मकड़ी के जाले पर ओस की बूंदों की तरह चमक उठे.

"मेरी मिन्नी बहुत प्यारी है!" हेनरी ने कहा.

"जब तक मेरे पास मेरा हेनरी है, मेरे पास सब कुछ है," मिन्नी ने कहा.

और वे सही थे.

समाप्त